Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 10, October - 2023 Publication Date: 31/10/2023

DOIs:10.2018/SS/202310007 --:-- Research Paper / Article / Review

संस्कृति, संस्कार और नारी: सुभद्रा कुमारी चौहान

जयन्ती मिश्रा
पी.एच.डी. छात्रा, महिला अध्ययन विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email - shivambhu286@rediffmail.com

सारांश : संस्कृति और संस्कार अपने आप में ऐसी अवधारणाएँ हैं जिन्हें मात्र कुछ पंक्तियों में बताया नहीं जा सकता। दोनों ही सर्वव्यापी अवधारणाएँ है। भारतवर्ष के संदर्भ में यदि बात की जाए तो यहाँ की सांस्कृतिक और सांस्कारिक पहचान ही इसे सदियों से वैश्विक पटल पर सोने की चिड़िया के रूप में अभिव्यक्त करती रही है। भारतीय संस्कार, भारतीय संस्कृति के ही अभिन्न अंग है। समय के साथ देश की भौगोलिक सीमायें बदली तो परम्पराएँ और परिवेश भी निरन्तर समय के सापेक्ष बदलता चला गया। संस्कृति और संस्कार सदैव जीवित रहते हैं, उनका केवल स्वरूप बदलता है। प्रश्न यह है कि क्या संस्कृति की रक्षा करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व स्त्री के ही ऊपर है? ऐसा इसलिये क्योंकि जब भी संस्कारों की बात आती है तो आदर्श भारतीय स्त्री की छवि ही उभर कर आती है। पारंपरिक वेषभूषा से परिपूर्ण सिर पर आँचल और हाथ में पूजा की थाल लिये स्त्री की परिकल्पना ही संस्कृति होने की परिभाषा नहीं है। संस्कार और संस्कृति के रक्षण में स्त्री और पुरुष की समान भागीदारी अति आवश्यक है। सामाजिक परिवेश में सिर्फ और सिर्फ स्त्रीयों पर ही मूल्यपरक शिक्षा, संस्कार और संस्कृति की जिम्मेदारी डाल देना बड़ा कठिन है। यह सच है कि माता ही संतान की सर्वप्रथम शिक्षिका होती है। अतः एक हद तक स्त्रीयों पर इस दायित्व का पलड़ा अवश्य भारी हो जाता है, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं माना जा सकता कि पुरुष अर्थात् पिता अपने बच्चों को शिक्षा और संस्कार देने की भूमिका से अलग मान लिया जाए। सृष्टि रचना के संदर्भ में स्त्री-पुरुष की समानधर्मी महत्वपूर्ण भूमिका सर्वविदित है।

कुंजी शब्द: महिला सशक्तिकरण, महिला साहित्य, सुभद्रा कुमारी चौहान ।

1. प्रस्तावना :

उन्नीसवीं सदी के महिला जगत की आधार स्तम्भ सुभद्रा कुमारी चैहान निश्चित ही अलौकिक एवं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महिला साहित्यकार है, जिन्होंने प्राचीनकाल के कठिन दौर में स्त्रीयों को सशक्तिकरण की राह दिखाई। जिसके प्रयास में वह काफी हद तक सफल भी हुई। आज स्त्री विकास और स्त्री सशक्तिकरण के युग में स्त्री समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पैठ जमा रही है। निश्चित ही यह सामाजिक विकास की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक अच्छा संकेत है। समाज के नजरिए से व्यापक बदलाव परिलक्षित होता है। फिर भी हमें इस सत्य पर विचार करने की जरुरत है कि क्या स्त्री को एक व्यक्ति के रूप में पूर्वान्याय मिल सका है क्या उसने पुरुष के समान ही एक इंसान के रूप में जीवन निर्वाह की वह स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है जो वास्तव में उसे मिलनी चाहिए यहाँ संस्कृति और संस्कारों के नाम पे क्यों उसे ही शोषण का शिकार बनाया जाता रहा है। यह जानना भी स्त्री जगत के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारतीय संस्कृति किसी पर भी जुल्म ढाने वाली नहीं है। हमारी संस्कृति तो गांधी जी की प्रख्यात सूक्ति 'प्रेम है जहाँ जीवन है वहाँ' वाली है। इसलिये हमारे पुरुष सत्तात्मक समाज में रहने वाली पुरुष जाति से अनुरोध है कि वह स्त्रीयों को हेय दृष्टि से देखना बन्द कर दे। पुरुष भोली-भाली स्त्रीयों को मोहरा बनाकर उनका शील भंग करने में लगे रहते हैं, जो मानवीय मूल्यों पर सीधा प्रहार करते हुये समाज में टकराव को जन्म देता है। इसका सटीक उदाहरण सुभद्रा जी की कहानी 'कैलाशी नाची' में देखने को मिलता है- "मौका पाते ही वह हम लोगो को मिठाई खिलाने के बहाने अपने पास बैठाकर दोनों की माँग में सिंदूर भर देगा। फिर हम दोनों बहिनें उसकी ब्याही हुई स्त्री के बराबर हो जायेंगी।"1

"संस्कृति मानाव जीवन की प्राणवायु के समान है"2 सुभद्रा जी की नारियाँ भारतीय संस्कृति व संस्कार की द्योतक मानी जाती है। सुभद्रा जी स्वयं भी संस्कारवान व सांस्कृतिक, साहित्यिक परिवार से थी, तभी उनके अचार-विचार, व्यवहार

उदात्त थे। वे अपने घर के नौकर से भी आत्मीयता का भाव रखती थी। मेहमान के घर आने पर उसका सादर सत्कार करना वे अच्छे से जानती थी।

2. विषय विश्लेषण :

समाज में नारी अपने पारंपरिक रूपों में (माँ, बेटी, पत्नी, बहन, सास, ननद) पहचानी जाती है। सुभद्रा जी ने स्त्री के इन सभी रूपों का वर्णन अपने साहित्य में किया है, किन्तु 'माँ' के रूप में एक स्त्री का वर्णन कठिन है, जो सुभद्रा जी ने बेबाकी से किया है, जिसके प्रमाणित पक्ष इनकी कविता 'बालिका का परिचय' में मिलते हैं-

"यह मेरी गोदी की शोभा
सुख सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है,
मनोकामना मतवाली।
दीप-शिखा है अँधेरे की,
घणी घाटा की उजियारी।
उषा है वाह कमल भ्रंग की,
है पतझर की हरियाली।।"3

हमारे भारतवर्ष की स्त्री की मातृत्व शक्ति के कारवा उसे पुरुष से बड़ा समझा गया है। यह वरदान स्त्रियों को प्रकृति के सौजन्य से मिला है। सम्भवतः इसलिए स्त्री पूज्य समझी गई, वह कष्ट सह कर भी सृष्टि की रचना को आगे बढ़ाती है। शायद इस शक्ति के अनुरूप ही उसे दुनिया का सबसे शक्तिशाली जीव समझा गई है।

उन्नीसवीं सदी जैसे संक्रमवाकाल में संस्कृति व संस्कारों को बनाये रखते हुए आधुनिक मानसिकता का होना असम्भव कार्य था, जिसको आगे बढ़ाते हुए श्रीमती चैहान ने अपने सृजन एवं चिन्तन से भारतीय संस्कृति की गरिमा को गौरवान्वित किया। शायद सुभ्रदा जी की नज़रे भावी जीवन को देख पा रही थी। इसीलिए उन्होंने अपने कहानी लेखन में सामाजिक गिरावट आने के पूर्व ही देश की स्वतंत्रता के साथ ही साथ मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर भी बल दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि पर्दा प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, बाल-विवाह, दहेज प्रथा, विधवा पुनर्विवाह जैसी कुरीतियों को समाज से काफी हद तक कम किया जा सका। सुभद्रा जी पर्दा प्रथा की धुर विरोधी थी, परन्तु उन्होंने घूंघट का पर्दा न करके बड़े बुज़ुर्गो से नजरों का पर्दा जरूर किया। ऐसा करके श्रीमती चैहान ने अपनी भारतीय संस्कृति की मर्यादा को बनाये रखा और आधुनिक विचारधारा को भी। सुभद्रा जी का मानना था कि पर्दा प्रथा स्त्रियों में मानसिक अवसाद को जन्म देती है। जो उनके मानसिक विकास का सबसे बड़ा रोड़ा है। उनके विचार से स्त्री स्वेच्छा से यदि चाहे तो वह पर्दा करे, परन्तु पारिवारिक व सामाजिक दबाव में नहीं।

विश्व प्रेमी होने के साथ ही अपनी सांस्कृतिक व सांस्कारिक धरोहर को बचाये रखने के लिए सुभद्रा जी ने मानवतावाद पर भी बल दिया। मानव-प्रेमी की पुजारिन सुभद्रा जी स्पष्ट विचारों वाली थी। उनके मन में जातीय भेदभाव, ऊँच-नीच, काला- गोरा, स्त्री-पुरुष, अमीर- गरीब को अलग समझने का कोई भी विचार नहीं था। वे सभी को एक समान दृष्टि से देखती थी, जो मानववादी विचारधारा का विस्तार करने के लिए आवश्यक है। इसका एक ज्वलंत उदाहरवा सुभद्रा जी ने अपनी कहानी 'देवदासी' कहानी में प्रस्तुत किया है-"मैं एक मनुष्य हूँ और मनुष्यता का बर्ताव करना चाहता हूँ।"4

स्पष्टतः प्रेम की उपासिका सुभद्रा जी मानववादी विचारधारा को खत्म करने के बजाय विश्व पटल पर उसे बनाये रखने की सलाह देती है। वे स्वयं कहती है- "मानवतावाद के प्रगतिशील तत्वों और स्वच्छन्दतावाद के उदात्त भावों की अभिव्यंजना में पिछड़ी हुई मनोवृत्ति के बजाय आधुनिक सतेज दृष्टि का परिचय देती है।"5

3. निष्कर्ष :

तत्कालीन समय में शिक्षा की कमी के कारवा समाज के सांस्कृतिक विकास में गतिरोध आ गया था। जिसमें सुधार लाने के लिए सुभद्रा जी ने अथक प्रयास कर घर की चहारदीवारी में बन्द कुविठत होती स्त्रियों से वार्तालाप कर शिक्षा के अधिकार को बताते हुए उन्होंने घर-घर जा कर महिलाओं को जागरूक किया। जिसके परिणाम-स्वरूप समाज से छुपी रहने वाली महिलाएं घर के बाहर आयी और उनका आधुनिकीकरण संभव हुआ। जो पुरातन संस्कृति व संस्कार के विरूद्ध जाने लगा और नये समाज का निर्मावा होना प्रारंभ हो गया। आज के बदलते युग में जीवन निर्वाह रहन-सहन और सामाजिक दायरे में जबर्दस्त तरीके का बदलाव दृष्टिगोचर होने लगा है। कला एवं साहित्य जैसे क्षेत्र में स्त्रियों की पहचान किसी

से छिपी नहीं रह सकी है। संवेदनहीन छद्म और आडम्बर का आदिकालीन शिकार रही स्त्री आज स्वतंत्र है और इतनी स्वतंत्र है कि स्त्री-विमर्श का मुद्दा बनी हुई है।

भारतवर्ष संस्कारों का देश है। यहाँ कोई भी धार्मिक संस्कार, अनुंठान उत्सव आदि बिना स्त्री की सम्मिलितता के पूर्ण नहीं माना जाता। वैदिक काल से ही स्त्री धर्म, पूजन, हवन शास्त्रार्थ जैसे क्रियाकलापों में पुरुषों के साथ सम्मिलित होती रही है। देश के आत्मसम्मान और गौरव की रक्षा हेतु रानी लक्ष्मीबाई सरीखी नारियों का बलिदान हो जाना सांस्कृतिक दृढ़ता को सिध्द करता है। अतः सुभद्रा जी का मानना था कि स्त्री स्वाभिमान के नाम पर मात्र उसे प्रगति करने से रोकना यह उचित नहीं है।

निश्चय ही सुभद्रा जी का विशिष्ट प्रयोजन सामाजिक दुर्बलताओं के विरूद्ध साहसपूर्ण शंखनाद हैं, जो उन्हें इक्कीसवी सदी में भी जीवित रखे हैं।

संदर्भ सूची :

1. सुभद्रा कुमारी चौहान, सम्पूर्ण कहानियाँ, डॉ0 मधु शर्मा, राजपाल एंड सन्स, पृष्ट संख्या-49.
2. सुभद्रा कुमारी चौहान का कथा साहित्य, समग्र विशलेषण, सुनीता मवडल, आनन्द प्रकाशन, पृष्ट संख्या-44.
3. सुभद्रा कुमारी चौहान, डॉ0 सी0 एल0 देसाई, रावत प्रकाशन, पृष्ट संख्या-14.
4. सुभद्रा कुमारी चैहान का कथा साहित्य समग्र विशलेषण, सुनीता मवडल, आनन्द प्रकाशन, पृष्ट संख्या-71.
5. सुभद्रा कुमारी चैहान का कथा साहित्य समग्र विशलेषण, सुनीता मवडल, आनन्द प्रकाशन, पृष्ट संख्या-72.